शोधभूमि
शिक्षा एवं शिक्षण शास्त्र विषय की पूर्व समीक्षित शोध पत्रिका
Page No. : 138-145

कानपुर नगर में शिक्षित एवं अशिक्षित परिवारों के विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

दीक्षा सचान ,
शोधार्थी
डॉ. रत्नार्तुः मिश्र , सहायक आचार्या-सह-पर्यवेक्षिका
शिक्षा संकाय,छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय
कानपुर (उत्तर प्रदेश)

सारंशिका

प्राचीनकाल से ही शिक्षा को प्रकाश के रूप में स्वीकार किया गया है। शिक्षा वह प्रकाश स्रोत है जिसके द्वारा व्यक्ति जीवन में सन्मार्ग की ओर प्रेरित होता है। सुभाषितकार का कथन है कि ज्ञान मनुष्य का तीसरा नेत्र है जो उसके समस्त तत्वों के मूल को समझने में समर्थ बनाता है तथा उसे सही कार्य में प्रवृत्त करता है। (पाठक, 2009) (पृष्ठ संख्या 14)। कहा जाता है कि कोई देश तभी उन्नति कर सकता है जब उस राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक शिक्षित होगा। इस प्रकार एक बालक भी तभी उन्नति कर पाएगा जब उसका परिवार शिक्षित होगा। इस पर स्पेंसर महोदय अपनी पुस्तक शिक्षा में कहते हैं कि मां-बाप की स्थिति जैसी होती है बच्चों की भी वैसी होती है (स्पेंसर, 2007)(पृष्ठ संख्या 29)। पारिवारिक स्थिति, पारिवारिक वातावरण बालक के समायोजन को प्रभावित करता है। परिवार में शून्यता, अलगाव, एकाकीपन के कारण बालकों में कुंठा, तनाव को समायोजन की प्रवृत्तियां उत्पन्न हो रही हैं, जो बालक के समायोजन में बाधा उत्पन्न करती हैं। शेफर के अनुसार कोई बालक या व्यक्ति तभी तक समायोजित अनुभव करता है जब तक उसकी आवश्यकताएं और इन अवस्थाओं की पूर्ति से जुड़ी हुई उसकी कोशिश तथा परिस्थितियों के बीच संतुलन बना रहे। (मंगल, 2015)। चूंकि समाज में दो तरह के परिवार हैं- पहला शिक्षित परिवार, दूसरा अशिक्षित परिवार। शिक्षित परिवार के बालक आसानी से अपने अभिभावकों के मार्गदर्शन से समाज में समायोजित हो जाते हैं तथा यदि अभिभावक उच्च पदों पर आसीन होते हैं। तो वे उनके लिए प्रेरणा स्रोत बन जाते हैं। परंतु अशिक्षित परिवार के बालकों को अधिक संघर्ष करना पड़ता है जिस बालक में दृढ़ इच्छा शक्ति होती है वह अपने आप को समायोजित कर सफल हो जाता है। परंतु जो बालक संघर्ष नहीं कर पाता उसमें कुंठा, तनाव व भग्नासा उत्पन्न होती है, जिसके कारण बालक कुसमायोजित हो जाता है। इसलिए विद्यार्थी के जीवन को सभ्य व सुसंस्कृत बनाने के लिए परिवार को शिक्षित होना आवश्यक है। शिक्षित परिवार बालक पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। जिससे बालक पूर्ण समायोजित रहते हैं।

प्रस्तावना -

मनुष्य जीवन भर वातावरण के साथ तालमेल बैठाने का प्रयत्न करता रहता है। व्यक्ति के जीवन में अनुकूल व विपरीत परिस्थितियां दस्तक देती हैं। इन परिस्थितियों से निपटने के लिए व्यक्ति अपनी क्षमतानुसार स्वयं को समायोजित करने का प्रयास करता रहता है। व्यक्तियों में स्वयं को समायोजित करने की क्षमता अलग-अलग होती है। कुछ व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में भी अपना मानसिक संतुलन नहीं होते और अच्छे से समायोजन कर लेते हैं। इसके विपरीत कुछ व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में अपना मानसिक संतुलन खो बैठते हैं, जिसके कारण वे तनाव और मानसिक द्वंद का शिकार हो जाते हैं। यह व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है। जो विद्यार्थी वातावरण के अनुकूल स्वयं को समायोजित नहीं कर पाते हैं। उनका न तो पढ़ने में मन लगता है, न ही किसी अन्य क्षेत्र में सफल हो पाते हैं। समायोजन को कई कारक प्रभावित करते हैं, जैसे- वंशानुक्रम, आर्थिक स्थिति, बुद्धि, पारिवारिक वातावरण, विद्यालय वातावरण आदि। इन कारकों से पारिवारिक वातावरण का समायोजन में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षा के आधार पर परिवार दो प्रकार के होते हैं - शिक्षित परिवार, अशिक्षित परिवार। एक शिक्षित परिवार का बालक आसानी से समाज, शैक्षिक व अन्य क्षेत्रों पर अपने को समायोजित कर लेता है। परंतु अशिक्षित परिवार के बालकों को समाज व अन्य क्षेत्रों में बहुत संघर्ष करना पड़ता है। कुछ बालक दृढ़ इच्छाशक्ति से समायोजित हो जाते हैं परंतु कुछ बालक कुसमायोजित हो जाते हैं। इस प्रकार के कारणों को खोजने के प्रयास से शोधार्थी ने इस समस्या को चयनित किया तथा ज्ञात करने की कोशिश की कि क्या शिक्षित व अशिक्षित परिवारों के विद्यार्थियों के समायोजन में अंतर है?

अध्ययन के उद्देश्य -

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

1. स्नातक स्तर के शिक्षित व अशिक्षित परिवारों के छात्र व छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों की प्रकार्यात्मक परिभाषा -

1. शिक्षित परिवार - शिक्षित परिवार से तात्पर्य ऐसे परिवार से है, जो पढ़ना - लिखना जानते हो और उन्होंने विधिवत विद्यालयी शिक्षा ग्रहण की हो।

2. अशिक्षित परिवार - अशिक्षित परिवार से तात्पर्य ऐसे परिवार से है, जो पढ़ना लिखना बिल्कुल नहीं जानते अर्थात जिन्होंने औपचारिक रूप से शिक्षा ग्रहण नहीं की है।

3.समायोजन- गेट्स, जेरसिल्ड एवं अन्य का कहना है "समायोजन एक ऐसी सतत् प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक व्यक्ति अपने व्यवहार में इस प्रकार से परिवर्तन करता है कि उसे स्वयं तथा अपने वातावरण के बीच और अधिक मधुर सबंध स्थापित करने में मदद मिल सके। " (मंगल, 2015) सामान्य भाषा में "समायोजन " से तात्पर्य परिस्थितियों व वातावरण के साथ तालमेल व अनुकूलन से लिया जाता है। इस विश्व में प्राणी ज्यों ही शिशु के रूप में माता के गर्भ से जन्म लेता है। उसको अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए भौतिक एवं सामाजिक वातावरण से अनुकूलन करना पड़ता है। इस प्रकार समायोजन एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं व इन आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली परिस्थितियों में संतुलन कायम करता है।

अध्ययन की परिकल्पना -

प्रस्तुत अध्ययन की परिकल्पना निम्नलिखित हैं-

1. स्नातक स्तर के शिक्षित व अशिक्षित परिवार के छात्र व छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

अध्ययन का परिसीमन -

प्रस्तुत शोध कार्य में निम्नलिखित परिसीमाओं का पालन किया गया है -

1. प्रस्तुत शोध कार्य कानपुर नगर में किया गया है।
2. इस अध्ययन में स्नातक स्तर के बी.ए. व बी.एस-सी. के विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया है।

अनुसंधान विधि -

यह अध्ययन स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन की तुलनात्मकता को ज्ञात करने से संबंधित है। प्रस्तुत अध्ययन की वर्णनात्मक अनुसंधान अभिकल्प के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। सर्वप्रथम सर्वेक्षण विधि के प्रयोग द्वारा कानपुर नगर के महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों से आंकड़े एकत्रित किया गया। इन महाविद्यालयों व विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों का चयन यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा किया गया। न्यादर्श में कुल 120 विद्यार्थी सम्मिलित है।

प्रयुक्त उपकरण -

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रो. ए. के. पी. सिन्हा एवं प्रो. आर. पी. सिंह का कॉलेज छात्र एवं छात्राओं की समायोजन मापनी का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण -

शून्य परिकल्पना- स्नातक स्तर के शिक्षित व अशिक्षित परिवारों के विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

वैकल्पिक परिकल्पना- स्नातक स्तर के शिक्षित अशिक्षित परिवारों के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अंतर है।

स्नातक स्तर के शिक्षित व अशिक्षित परिवारों के विद्यार्थियों के प्राप्तांकों के मध्यमानों के अंतर की सार्थकता के परीक्षण हेतु टी परीक्षण की गणना की गई जिसे सारणी-1 में प्रदर्शित किया गया है-

सारणी - 1

टी परीक्षण के परिणाम का सारांश

सारणी – 1

टी परीक्षण के परिणाम का सारांश

क्रम संख्या	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमानों का अंतर	मानक त्रुटि	मुक्तांश	सार्थक स्तर	टी परीक्षण का मान
1.	अशिक्षित परिवारों के विद्यार्थियों	60	39.68	13.85	2.24	2.62	118	0.05	0.85
2.	शिक्षित परिवारों के विद्यार्थियों	60	41.92	14.85					

सारणी संख्या - 1 में प्रदर्शित टी परीक्षण का मान है जो कि सार्थकता स्तर के 0.05 पर असार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना स्नातक स्तर के शिक्षित व अशिक्षित परिवारों के विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है, स्वीकृत की जाती है। जबकि वैकल्पिक परिकल्पना स्नातक स्तर के शिक्षित व अशिक्षित परिवारों के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अंतर है, अस्वीकृत की जाती है।

ग्राफ संख्या - 1

शिक्षित व अशिक्षित परिवारों के विद्यार्थियों के समायोजन की तुलना को प्रदर्शित करता स्तंभाकार आरेख

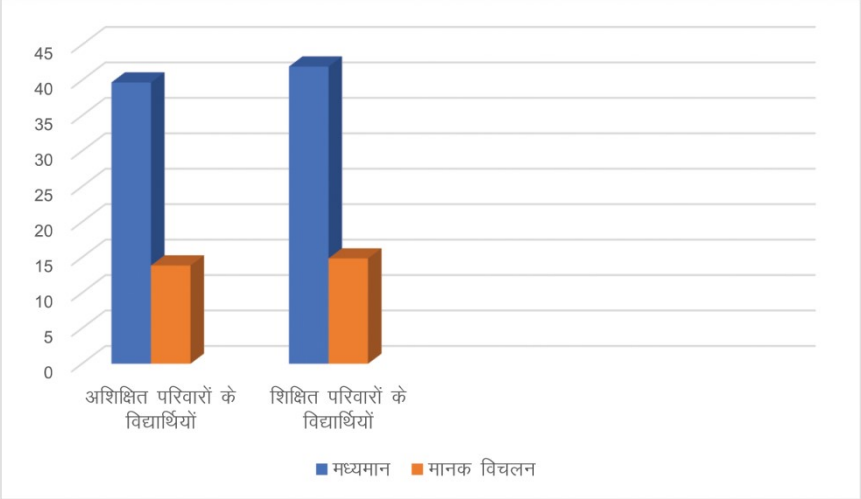

निष्कर्ष -

परिणाम द्वारा यह ज्ञात हुआ कि स्नातक स्तर के शिक्षित व अशिक्षित परिवारों के विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

प्राप्त परिणाम की पुष्टि संबंधित साहित्य सर्वेक्षण द्वारा पंत एट.आल.(2015) के निष्कर्ष में प्राप्त हुआ की छात्राओं का समायोजन छात्रों से बेहतर होता है। सिंह,(2015) के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि कला वर्ग के विद्यार्थियों का समायोजन विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों से बेहतर होता है। सिंह (2018) ने ज्ञात किया कि जौनसारी जनजाति के माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की अपेक्षा गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी अधिक समायोजित पाए गए। बाबासाहेब (2019) के सांख्यिकी विश्लेषण उपरांत ज्ञात हुआ कि छात्राओं का गृह, सामाजिक, संवेगिक और स्वास्थ्य समायोजन छात्रों की तुलना में बेहतर होता है। सिंह (2019) के निष्कर्ष द्वारा ज्ञात हुआ कि माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत दिव्यांग बालक व बालिकाओं के समायोजन में सार्थक अंतर होता है। हफलॉन्गबार एवं बोर्दोलोई (2022) द्वारा प्राप्त परिणाम से ज्ञात हुआ कि स्नातक स्तर के छात्र व छात्राओं के बीच समायोजन समस्या में सार्थक अंतर होता है।

इस प्रकार इन अध्ययनों के द्वारा प्रस्तुत अध्ययन में प्राप्त प्रयोज्यों से पृथक परिणाम प्राप्त हुआ। इसके निम्नलिखित कारण हो सकते हैं -

1. अशिक्षित होने का तात्पर्य है कि साक्षर न होना अर्थात औपचारिक शिक्षा प्राप्त न करना परंतु व्यक्ति अपने जीवन में स्वयं व अपने पूर्वजों के अनुभवों से कुछ न कुछ सीखता रहता है इन अनुभवों से ही वह अपने को समायोजित कर लेता है।
2. आजकल माता-पिता शिक्षा को लेकर जागरूक हो गए हैं। वह अपनी दैनिक दिनचर्या से धन की बचत करके अपने बालकों को अच्छी शिक्षा दिलाने का प्रयास करते हैं । ताकि वह इस समाज में सही ढंग से समायोजित हो सके।
3. सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार की योजनाएं चलाई जा रहे हैं जिसका लाभ लोगों द्वारा उठाया जा रहा है तथा वे इन योजनाओं का लाभ उठाकर समाज की मुख्यधारा से जुड़ कर अपने को समायोजित कर रहे हैं।
4. शिक्षित परिवार के अभिभावक आजकल अपने बच्चों को इतना समय नहीं दे पाते हैं जिससे बालकों में असंतोष उत्पन्न होता है।

संदर्भ-ग्रंथ सूची:

1. अस्थाना, वी. एवं अस्थाना, एस. (2019). मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन. श्री विनोद पुस्तक मंदिर.
2. उपाध्याय, आर. (2018). शिक्षा मनोविज्ञान. वंदना पब्लिकेशन.
3. कपिल, एच. के. (2012). अनुसंधान विधियां (व्यवहारपरक विज्ञान). एच. पी. भार्गव बुक हाउस.
4. कपिल, एच. के. (2010). सांख्यिकी के मूल तत्व (सामाजिक विज्ञानो में). अग्रवाल पब्लिकेशन.
5. गुप्ता, एम. (2015). सरकारी तथा स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता एवं शैक्षिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन. शोध श्री, 16(3), 49-50.

6. गुप्ता, आर. (2021). शिक्षित और अशिक्षित परिवारों के विद्यार्थियों के समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन. (अप्रकाशित डॉक्टरेट उपाधि शोध पेसिफिक यूनिवर्सिटी). ीजजचरूध्ध्ीकसण्ीं दकसमण्दमजध्10603ध्319289
7. गुप्ता, एस. पी. एवं गुप्ता, ए. (2022). अनुसंधान संदर्शिका. शारदा पुस्तक भवन.
8. गुप्ता, एस. पी. एवं गुप्ता, ए. (2018). सांख्यिकीय विधियां. शारदा पुस्तक भवन.
9. गुप्ता, एस. पी. एवं गुप्ता, ए. (2008). आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन. शारदा पुस्तक भवन.
10. गुप्ता, एस. पी. एवं गुप्ता, ए. (2004). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान. शारदा पुस्तक भवन.
11. चैहान, आर. एवं पाठक, पी. डी. (2015). शिक्षा के मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य. अग्रवाल पब्लिकेशन.
12. जायसवाल, ए. (2019). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन आयाम एवं उनके माता-पिता की सहभागिता आयामों के मध्य संबंधों का अध्ययन. इंटरनेशनल जर्नल आफ अप्लाइड रिसर्च, 3(8), 341-344.
13. पाठक, आर. पी. (2009). भारतीय मनोविज्ञान एक परिचय. राधा पब्लिकेशन्स.
14. पांडा, एम. (2020). भुवनेश्वर शहर में कामकाजी महिलाओं की शैक्षिक स्थिति और समायोजन समस्याओं का अध्ययन. (अप्रकाशित डॉक्टरेट उपाधि शोध उत्कल यूनिवर्सिटी) http%//shodhgangainflibnetacin%8080/jspuri/handle/10603/281609
15. मंगल, एस. के. (2015). शिक्षा मनोविज्ञान. पीएचआई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड.
16. माथुर, एस. (2020). कक्षा-कक्ष वातावरण: सामाजिक समायोजन. शिविरा पत्रिका, 61(04), 13.
17. राय, वी. के. (2008). शिक्षा में मापन मूल्यांकन एवं सांख्यिकी. यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन.
18. स्पेंसर, एच. (2007). शिक्षा. राधा पब्लिकेशन्स.
19. सिंह, ए. बी. (2019). माध्यमिक शाला में अध्ययनरत दिव्यांग बालक एवं दिव्यांग बालिकाओं की समायोजन क्षमता का विश्लेषणात्मक अध्ययन. जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजी एंड इन्नोवेटिव रिसर्च, 6(5), 344-351.
20. सिंह, एल. एवं शुक्ला, वी. (2019). शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन. इन जर्नल ऑफ एडवांस एंड स्कॉलर इन अप्लाइड एजूकेशन. http%//ignited-in/a/57782
21. सिंह, एस. (2021). नशे में धुत परिवारों से आने वाले किशोर छात्रों के समायोजन और आत्मा अवधारणा का अध्ययन. (अप्रकाशित डॉक्टरेट शोध उपाधि, पेसिफिक यूनिवर्सिटी)http%//shodhgangainflibnetac.in%8080/jspui/handle/10603/339113
22. सिंह, के. (2018). जौनसारी जनजाति के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के गृह वातावरण का समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन. इंटरनेशनल जर्नल आफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स, 6(2), 64-68.
23. सिंह, बी. (2018). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर समायोजन के प्रभाव का अध्ययन. इंटरनेशनल एजुकेशनल जर्नल, 3(1), 195-200.
24. श्रीवास्तव, ए. एवं चिंतामणि, ए. (2019). नक्सली क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों और छात्राओं के समायोजन एवं चिंता स्तर का अध्ययन. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिव्यूज एंड रिसर्च इन सोशल साइंसेज, 7(3), 681-686.
25. श्रीवास्तव, डी. एन. एवं वर्मा, पी. (2018). मनोविज्ञान शिक्षा और अन्य सामाजिक विज्ञानों में सांख्यिकी. श्री विनोद पुस्तक मंदिर.

26. श्रीवास्तव, डी. एस. एवं सिंह, वाई. के. (2006). शिक्षा मनोविज्ञान. यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन.
27. Babasaheb, R. R. (2019). A study of adjustment among male and female college going students. The International Journal Of Indian Psychology, 07(04), 10711080.doi:10.25215/0704.125
28. Best, J. W. & Kahn, J. V. (2022). Research in education. Prentice Hall Of India Pvt. Ltd.
29. Bhat, S. A. & Bhat, M. A. (2020). A study of adjustment problems of rural and urban secondary school student of South Kashmir. Mukt Shabd Journal, 9(4), 1435-1445.
30. Bimla, (2019). A comparative study of adjustment of college going students. Motherhood International Journal Of Multidisciplinary Research And Development, 03(02), 23-34.
31. Clinciu, A. I. et. al. (2021). Academic dishonesty and academic adjustment among the students at university level: an exploratry study (EJ1302067). ERIC. https://eric.ed.gov/?q=A+comparative+study+on+educated+and+uneducated+families%27+students+adjustment &pg=17&id=EJ1302067
32. Deka, S. (2017). Adjustment problems among adolescent girl students of secondary schools: a study. International Journal For Innovative Research Multidisciplinary Field, 03(08), 191-195.
33. Garrett, H.E. (2005). Statistics in psychology and education. Vakils Feffer & Simons.
34. Genctanirim, K. D. (2022). Effect of family, friends and school climate on school adjustment of middle school students (EJ1343090). ERIC.https://eric.ed.gov/?q=educated+anduneducated+family%27s+Student+Adjustment&id=EJ1343090
35. Haflongber, D. & Bordoloi, D. (2022). A study on adjustment of undergraduate students in relation to gender. International Journal Of Health Sciences, 6(S1), 9476-9480. https://doi.org/10.53730/ijhs.v6nS1.7161
36. Irozuru, E. (2018). Family variables and social adjustment of secondary school students in icom education zone of cross river state. Harvard Conference On A Preparing Student For An Uncertain Future, USA, 16(1), 67-77.
37. Kishor, N. (2017). Adjustment problems of elementary school children of single parent and both parent families. An Educational Referred National Journal, 05(02), 20-42.
38. Koul, L. (2020). Methodology of educational research. Vani Educational Books.
39. Kumari, S. & Tiwari, J. (2021). A comparative study of adjustment of adolescence girl of educated and uneducated mothers. Remarking And Analisation, 6(4), H-1 - H-7.

40. Pant, M. K. et. al. (2015). A comparative study of adjustment and emotional maturity between gender and stream of undergraduate student. International Journal Of Research In Social Sciences And Humanities, 05(03), 01-12.
41. Patel, H. & Sagar, L. K. (2021). A comparative study of adjustment among urban and rural adolescent students. International Research Journal Of Commerce Arts And Science,12(8), 65-69.
42. Singh, B. P. (2015). A study of mental health and adjustment in science and art students. Scholarly Research Journal For Humanity Science And English Language, 02(07), 1015-1020.
43. Skinner, C. E. (2015). Educational psychology. PHI Private Limited.
44. Yadav, S. & Chauhan, S. (2014). Methodology of educational research. Shri Vinod Pustak Mandir.